Date:- 30|4|2020
Content Writer:-
Dr. Akhay Kumar Pathak
Deptt. of Economics,
Marwari College,
Darbhanga (LNMU)

Degree Part-II (Hons)
Paper-I
Content of the Paper:-
Micro Economics
Module:-3

TOPIC :- ISOQUANT AND ITS FEATURES
(समोत्पाद एवं इसकी विशेषताएं)

उत्पादक द्वारा न्यूनतम लागत पर अधिकतम मात्रा के उत्पादन हेतु जिस आनुकूलतम संयोग का निर्माण किया जाता है, उसे समोत्पाद वक्र द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इसे 'उत्पादन तटस्थता वक्र' भी कहा जाता है। समोत्पाद वक्र को विकसित करने में महत्वपूर्ण रूप से प्रो० फिशर, प्रो० हिक्स, प्रो० काल्डोर तथा प्रो० बोल्डिंग जैसे अर्थशास्त्रियों का नाम लिया जाता है।

समोत्पाद वक्र मांग-सिद्धान्त के तटस्थता वक्र की भांति होता है। समोत्पाद वक्र उत्पत्ति के किन्हीं दो साधनों के उन विभिन्न संयोगों को व्यक्त करता है जिनसे उत्पादन एक समान मात्रा में प्राप्त की जा सकती है। समोत्पाद वक्र को निम्नांकित मानचित्र द्वारा स्पष्ट विश्लेषण किया जा सकता है:

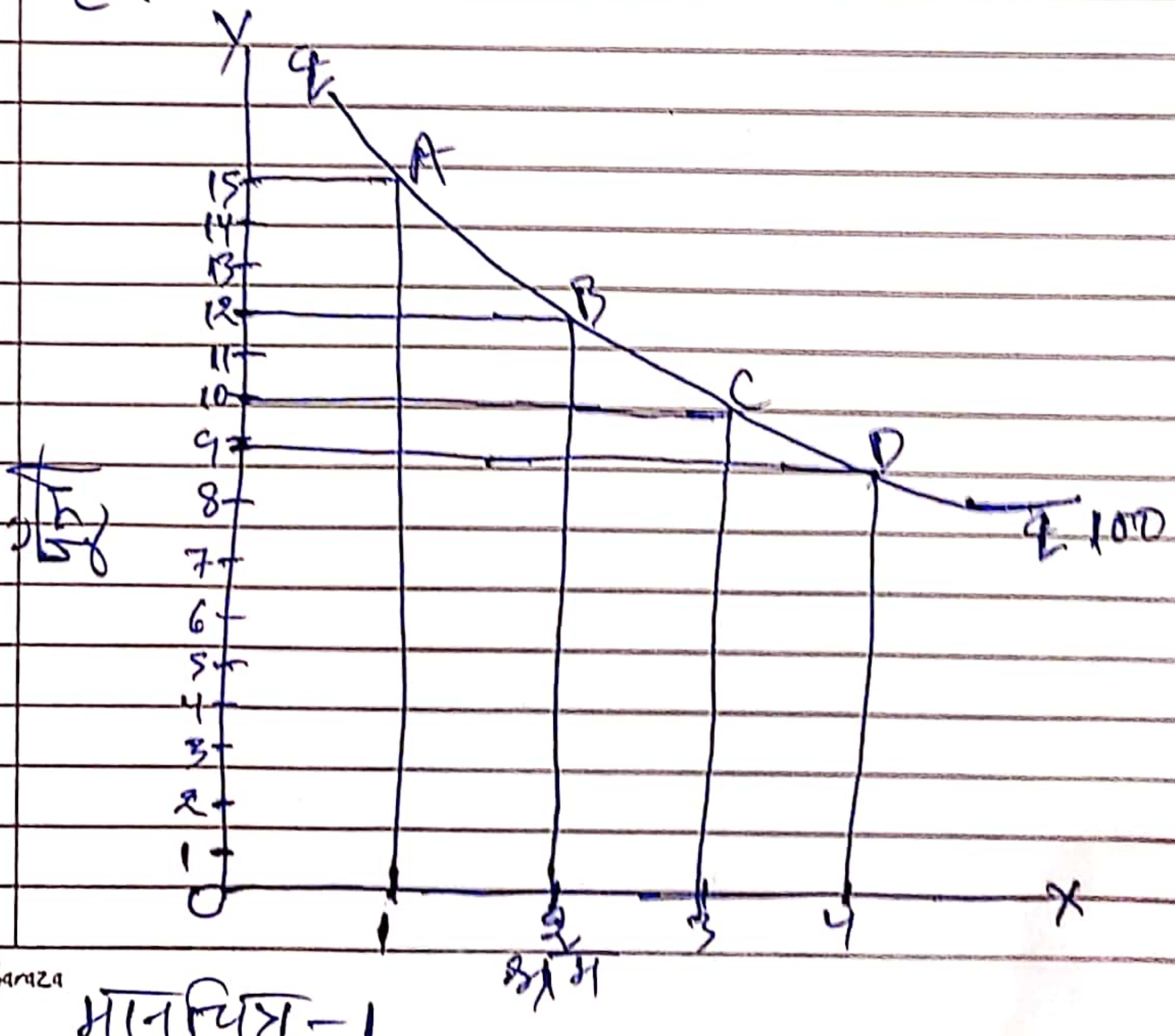

मानचित्र-1

मानचित्र-1 में OX अक्ष पर श्रम की इकाईयाँ तथा OY अक्ष पर पूंजी की इकाइयाँ प्रदर्शित की गयी है। A, B, C एवं D बिन्दु पूंजी एवं श्रम के विभिन्न संयोगों को व्यक्त करती हैं। A बिन्दु पर उत्पादक 1 श्रमिक तथा पूँजी की 15 इकाइयों से 100 क्विंटल चावल प्राप्त करता है। इतना ही उत्पादन 2 श्रमिक एवं 12 पूंजी इकाई से प्राप्त होता है जो B बिन्दु से स्पष्ट है। इसी तरह क्रमशः C एवं D बिन्दुओं पर 3 श्रमिक एवं पूंजी की 10 इकाई तथा 4 श्रमिक एवं पूँजी की 9 इकाइयों से प्राप्त होगी। यदि हम A, B, C एवं D बिन्दुओं का मिलान करते हैं तो हमें एक समोत्पाद वक्र IQ प्राप्त होता है। इस समोत्पाद वक्र के प्रत्येक बिन्दु की उत्पादन की मात्रा समान रहती है इसलिए उत्पादक विभिन्न संयोगों पर उदासीन रहता है। अर्थात समोत्पाद वक्र को उत्पादन की उदासीनता रेखा के नाम से भी जाना जाता है। मानचित्र-1 में समोत्पाद वक्र X एवं Y दो उत्पत्ति के साधनों के विभिन्न संयोग बताते हैं, जो कि एक निश्चित मात्रा में उत्पादन करते हैं।

समोत्पाद वक्र की मान्यताएँ :-

समोत्पाद वक्र की क्रियाशीलता निम्नांकित मान्यताओं पर आधारित है :-

(i) उत्पादन के दो साधनों का प्रयोग।
(ii) उत्पादन तकनीक पहले से ज्ञात तथा स्थिर।
(iii) उत्पादन के साधन विभाज्य।
(iv) उत्पादन के साधनों का अधिकतम कुशलता से प्रयोग।

समोत्पाद वक्र की विशेषताएँ :-

समोत्पाद वक्र की निम्नांकित प्रमुख विशेषताएँ हैं :-

(i) एक समोत्पाद वक्र उत्पादन के एक स्थिर स्तर को बताता है।

(ii) समोत्पाद रेखाओं का ढलान ऊपर से नीचे की ओर होता है।

(iii) समोत्पाद रेखाएँ मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर होती हैं।

(iv) समोत्पाद रेखाएँ कभी एक-दूसरे को नहीं काटती है।

(v) समोत्पाद रेखा जितनी ऊँची होती है, उतनी ही अधिक उत्पादन मात्रा को प्रकट करती है।

(vi) समोत्पाद वक्र समानान्तर होना आवश्यक नहीं है।

(vii) दो समोत्पाद वक्रों के बीच अनेक समोत्पाद वक्र हो सकते हैं।

(viii) समोत्पाद वक्र किसी भी अक्ष को स्पर्श नहीं कर सकता।

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि उत्पादक अपने उत्पादन निर्णय के अंतर्गत साधनों के अनुकूलतम संयोग का चयन करता है जिससे वह संतुलन की स्थिति में रहता है। उत्पादक के इस निर्णय में समोत्पाद वक्र विश्लेषण का महत्वपूर्ण स्थान है।